वर्ण-विचार

भाषा की सबसे छोटी इकाई को वर्ण कहते हैं। प्रत्येक भाषा के कुछ निश्चित वर्ण होते हैं जिनके मेल से शब्द बनता है। वर्णों के और छोटे टुकड़े नहीं किए जा सकते । वर्णों का समूह 'वर्णमाला' कहलाता है। वर्ण को अक्षर भी कहते हैं। ये दो प्रकार के होते हैं

1] स्वर

2] व्यंजन

स्वर --

स्वरों का उच्चारण स्वतंत्र रूप से होता है। इन्हे मूल ध्वनि भी कहते है। हिन्दी की वर्णमाला में केवल स्वरों का उच्चारण ही पूर्ण होता है। व्यंजनों का उच्चारण नहीं होता। स्वरों का उच्चारण करते समय हवा बिना किसी रुकावट के मुख से बाहर आती है। हिंदी के 11 स्वर और 02 स्वरादि है।

स्वर- अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ

स्वरादि - अं, अः

इस प्रकार हिन्दी वर्णमाला की स्वर संख्या ग्यारह और दो स्वरादि मिलाकर तेरह बन जाती है।

स्वरों का वर्गीकरण

ह्रस्व स्वर/ मूल स्वर -- वर्णमाला में अ, इ, उ, ऋ इन चार स्वरों को ही ह्रस्व स्वर कहा जाता है। जिन स्वरों के उच्चारण में कम समय लगता है,वे ह्रस्व स्वर कहलाते हैं। इनकी मात्रा एक गिनी जाती है।

दीर्घ स्वर-- आ, ई, ऊ इन तीन स्वरों को दीर्घ स्वर कहा जाता है। जिन स्वरों के उच्चारण में ह्रस्व के तुलना में लगभग दुगना समय लगता है, दीर्घ स्वर कहलाते हैं। ये मूल स्वरों के मेल से बनते है इसलिए इन्हे संधि स्वर भी कहा जाता है। जैसे -- अ + अ = आ, इ + इ = ई, उ + उ = ऊ

संयुक्त स्वर -- ए, ऐ, ओ, औ इन चार स्वरों को संयुक्त स्वर कहा जाता है। इन्हें दीर्घ स्वरों की भाँति दो मात्राओं में गिना जाता है। एक से अनेक स्वर एकत्रित आने के कारण संयुक्त स्वर कहा जाता है।

जैसे-- अ+इ = ए, आ+उ = ओ, आ+ए = ऐ, अ+ओ = औ

स्वरादि-- अं,अ: इन दो अंतिम स्वरों को स्वरादि कहा जाता है। इसे अनुस्वार और विसर्ग भी कहते हैं।

प्लुत स्वर-- प्लुत स्वर के उच्चारण में दीर्घ स्वर के उच्चारण से भी में अधिक समय लगता है। यह वह स्वर है जिसे किसी को पुकारते समय उच्चारित किया जाता है। इनका चिह्न अखंड है जो पहले स्वर के बाद आता है--

उदा. ओ रा sss म

ओ sss म

व्यंजन --

व्यंजनों का उच्चारण करते समय हवा मुख के अलग-अलग हिस्सों को छूकर बाहर निकलती है। इनका उच्चारण करते समय स्वरों का सहयोग लेना पड़ता है। बिना स्वर के किसी भी व्यंजन का उच्चारण नहीं होता।

हिन्दी में 33 व्यंजन होते है। उनमें 25 स्पर्श व्यंजन है, 04 अंतस्थ व्यंजन, 04 उष्म व्यंजन। इन्हे मिलाकर कुल 33 संख्या होती है। संयुक्त व्यंजन में तीन व्यंजन आते है-- क्ष, त्र, ज्ञ ।

इनका वर्गीकरण इस प्रकार किया जाता है--

By Dr. Sangita Chitrakoti

1] स्पर्श व्यंजन / स्फोटक -- जिन व्यंजनों के उच्चारण में कंठ आदि स्थान से जीभ का स्पर्श होता है उन व्यंजनों को स्पर्श व्यंजन कहते है। स्पर्श व्यंजन के पाँच भेद है। प्रत्येक भेद में पाँच-पाँच व्यंजन आते है। इन भेदों को वर्ग कहते है। इसका प्रथम अक्षर उस वर्ग का नाम होता है। जैसे -- 'क' वर्ग, 'च' वर्ग, 'ट' वर्ग आदि।

'क' वर्ग -- क, ख, ग, घ, ङ्ग
'च' वर्ग -- च, छ, ज, झ, ञ
'ट' वर्ग -- ट, ठ, ड, ढ, ण
'त' वर्ग -- त, थ, द, ध, न,
'प' वर्ग -- प, फ, ब, भ, म

दो अंग एक दूसरे का स्पर्श करके हवा का रोकते है और फिर एक दूसरे से दूर-हटकर हवा को जाने देते है। इसकी तीन स्थितियाँ है - 1] हवा का आगमन2] हवा का अवरोध 3] स्फोट / उन्मोचन

2] अंतस्थ व्यंजन :-- य 'र' ल 'व' इन चार व्यंजनों को अंतस्थ व्यंजन कहते है क्योंकि इन चार व्यंजनों से जीभ का पूर्ण स्पर्श नहीं होता। यह उच्चारण उष्म और स्पर्श के बीच में होता है।

3] उष्म व्यंजन :-- श, ष, स, ह इन चार व्यंजनों को ऊष्म व्यंजन कहते है। इनके उच्चारण में जीभ के स्पर्श के स्थान पर श्वास का वेग रहता है। जिससे क्रिया में उष्णता निर्माण होती है। इसलिए इन चार व्यंजनों को उष्म व्यंजन कहा जाता है।

4] संयुक्त व्यंजन :-- क्ष, त्र, ज्ञ इन तीन व्यंजनों को संयुक्त व्यंजन कहते है क्योंकि इन तीनों में दो से अधिक व्यंजन और एक स्वर होता है।

जैसे -- क्ष = क+ष +अ
ज्ञ = द +ञ +अ
त्र = त +र+अ

वर्णमाला में इसके अलावा चंद्र और चंद्र बिंदी ये भी चिह्न होते है। जैसे -- डॉक्टर, अँगना